10 मिर्ज़ा नुकता

दूसरों के काम में या दलील में मीनमेख निकालना हमारे कथानायक को सबसे सरल काम नज़र आता था। कई बार तो किसी का कथन पूरा होने से पहले ही ये संशोधन करने पर उतर आते थे। फिर भी एक दिन मिर्ज़ा नुकता को इस सरलतम काम से तौबा क्यों करनी पड़ी, आइए हम भी तो जानें।

वे लोग भी जो मिर्ज़ा को जानते हैं, इस भ्रम के शिकार हैं कि नुकता इनका नाम या उपनाम है। वास्तव में यह इनकी उपाधि है जो किसी हँसोड़ ने इनकी तत्वदर्शिता की दाद देते हुए इन्हें प्रदान की थी।

मिर्ज़ा नुकता में विशेषता यह है कि वह हर बात में नुकता पैदा करते हैं। अब क्योंकि हर बात में नुकता पैदा करना आसान नहीं, इसलिए प्राय: ऐसी अद्भुत बातें करते हैं कि इनकी बजाय कोई और हो तो अवश्यमेव उसे पागल या सनकी समझा जाए। परंतु इनकी आयु का लिहाज़ करते हुए लोग इन्हें केवल मिर्ज़ा नुकता कहते हैं।

मिर्ज़ा से मेरी पहली भेंट एक सभा में हुई। आप वहाँ श्रोतागण को यह समझाने का प्रयास कर रहे थे कि सुबह-सवेरे उठना अव्वल दरजे की मूर्खता है। युक्ति इन्होंने यह प्रस्तुत की कि मेडिकल दृष्टिकोण से दस घंटे आराम करना स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके अतिरिक्त प्रात:काल जो ठंडी हवा चलती है वह एक तरह की लोरी है, जो प्रकृति अपने बच्चों को सुलाने के लिए गाती है।

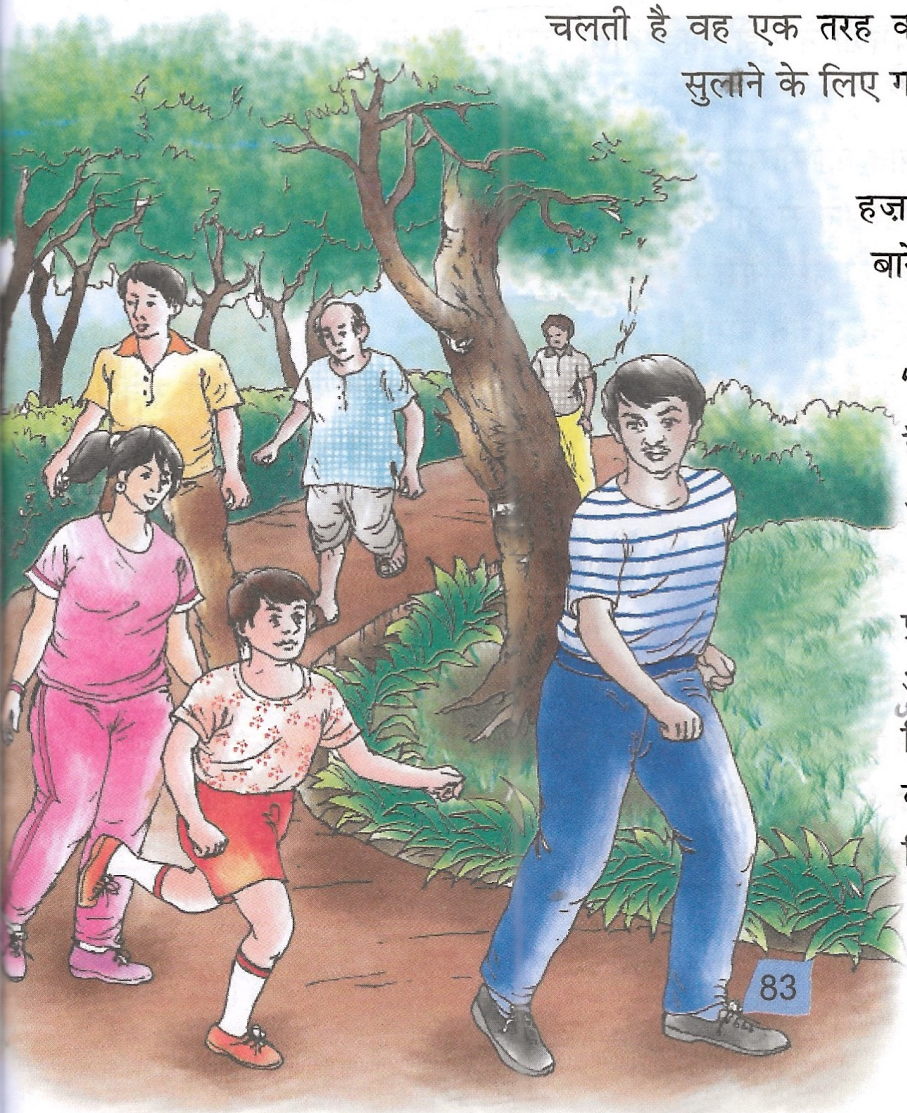

श्रोताओं में से किसी ने कहा, "मिर्ज़ा, हज़ारों लोग प्रात:काल सैर को जाते हैं। उनके बारे में क्या विचार है?"

मिर्ज़ा ने बड़ी गंभीरता से फ़रमाया, "प्राय: ये लोग अनिद्रा के रोग से ग्रस्त होते हैं। जब प्रयत्न के बावजूद उन्हें नींद नहीं आती, तो उठकर सैर को चल देते हैं।"

मैं मिर्ज़ा की हाज़िर-जवाबी से बहुत प्रभावित हुआ। वास्तव में इनका अपने अभिमत को प्रकट करने का ढंग इतना निराला था कि मैंने इनसे जान-पहचान बढ़ाने का निश्चय कर लिया। मेरी आशा के विपरीत ये मेरे बेतकल्लुफ़ मित्र बन गए और

तब मुझपर यह रहस्य खुला कि इनसे मित्रता करके मैंने एक बड़ी मुसीबत मोल ली है। विरोध इनकी घुट्टी में मिला है। इधर मैंने कोई बात की, उधर झट इन्होंने उसका खंडन करते हुए कहा, "आपका विचार शत-प्रतिशत गलत है। वास्तव में आप भी बहुत-से पढ़े-लिखों की तरह वज्र मूर्ख हैं।"

एक दिन मैंने यों ही बातों-बातों में कहा, "गरमी के मौसम में प्रतिदिन स्नान करना चाहिए।"

मिर्ज़ा हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ गए, "दैनिक स्नान से भला क्या लाभ? क्या आपका शरीर केवल चौबीस घंटों में इतना मलिन हो जाता है कि आप स्नान की आवश्यकता अनुभव करते हैं? आप शायद नहीं जानते, स्नान निहायत अप्राकृतिक विधान है। आपने कभी कीड़े-मकोड़ों, पशुओं या पक्षियों को स्नान करते देखा है?"

मैंने डरते-डरते निवेदन किया, "चिड़ियों और भैंसों को नहाते तो आपने भी देखा होगा।"

कहने लगे, "यह सब मनुष्य की कुसंगति का फल है। मेरा दावा है अगर मनुष्य नहाना छोड़ दे तो चिड़ियों और भैंसों को भी इस निरर्थक वहम* से छुटकारा मिल सकता है।"

हमने हैरान होकर कहा, "तो आप नहाने की गणना निरर्थक क्रिया-कांड में करते हैं?"

"निस्संदेह, मैं समझता हूँ नहाना सभ्य मनुष्य की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। मेरे विचार में यदि इससे तौबा कर ली जाए, तो समय के अतिरिक्त साबुन की भी बचत हो सकती है।"

वैसे तो मिर्ज़ा हर बात में विरोध का पहलू ढूँढ़ लेते हैं, परंतु विवाद ऋतु से संबंधित हो तो उस समय इनका परिसंवाद सुनने योग्य होता है। दुर्भाग्यवश इन्हें हर ऋतु से अकारण बैर है। मुझे याद है कि एक बार मैंने वसंत ऋतु की प्रशंसा कर दी। मिर्ज़ा ने मुझे आड़े हाथों लिया और बोले, "मियाँ, अक्ल के मखाने लो, भला यह भी कोई मौसम है।"

यह समझते हुए कि शायद इन्हें बरसात का मौसम पसंद होगा, मैंने उसका ज़िक्र किया तो उन्होंने पहले से भी अधिक बौखलाकर कहा, "बरसात से अधिक वाहियात मौसम शायद ही कोई होगा। बाढ़ें आती हैं तो इस मौसम में, हैज़ा फैलता है तो इस मौसम में, घर टपकता है तो इस मौसम में। इसे तो मौसम की बजाय ईश्वर का अभिशाप कहना उचित होगा।"

एक दिन मैंने इरादा किया कि कोई ऐसी बात करूँ, जिसमें मिर्ज़ा कोई नुकता पैदा न कर सकें। अतः मैंने इन्हें संबोधित करते हुए कहा, "हर व्यक्ति यह मानता है कि सूर्य पूर्व में उदय होता है और पश्चिम में अस्त होता है, आपका क्या विचार है?"

मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही जब उन्होंने इस सार्वभौमिक सत्य में भी नुकता पैदा कर दिया। कहने लगे, "भाई, जो कुछ लोग कहते हैं या जो पुस्तकों में लिखा है उसपर तुरंत विश्वास मत कर लिया करो। मेरी खोज के अनुसार तो सूर्य पूर्व की बजाय उत्तर-पूर्व में उदय होता है और दक्षिण-पश्चिम में अस्त होता है। विश्वास न आए तो कंपास लेकर खुद प्रयोग कर देख लो।"

अब इनकी अग्निपरीक्षा लेना व्यर्थ था इसलिए मैंने इन्हें इनके हाल पर छोड़ दिया। पर जनवरी में एक ऐसी घटना हुई जिससे मिर्ज़ा छिद्रान्वेषी के बजाय तत्वान्वेषी बन गए।

*Meaningless Doubt

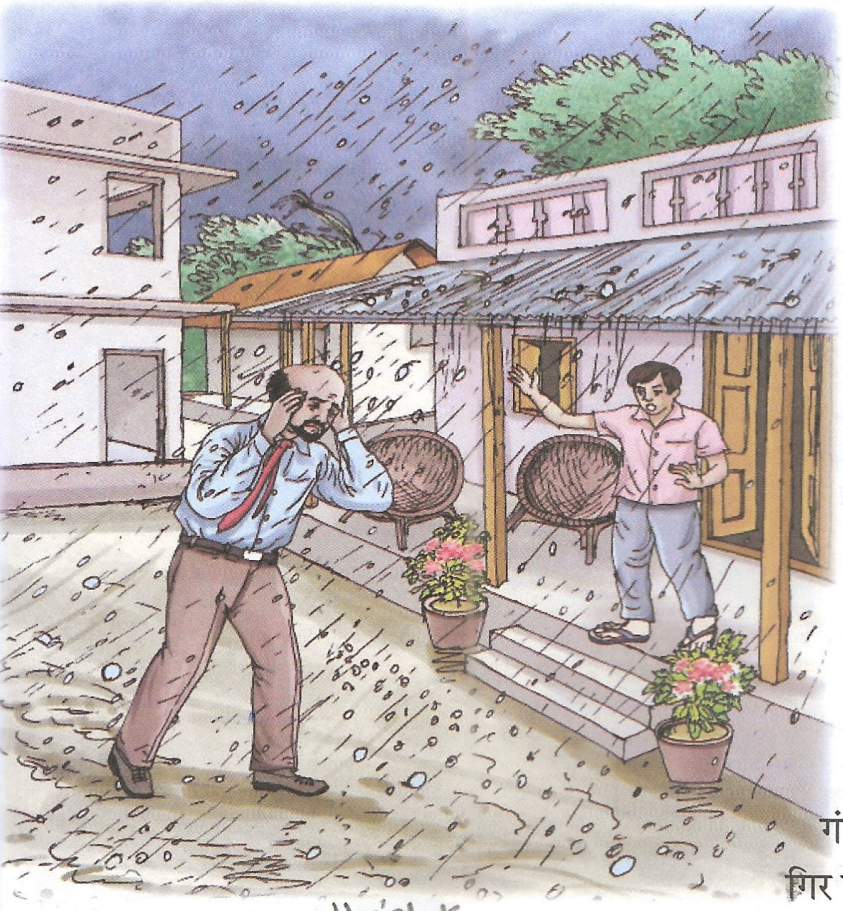

पंद्रह जनवरी की शाम को जब कड़ाके की सरदी पड़ रही थी, तो अकस्मात आकाश में अँधेरा छा गया। थोड़ी देर बाद बड़े-बड़े ओले पड़ने लगे। मिर्ज़ा और मैं बरामदे में खड़े ओलों का दृश्य देख रहे थे। मैंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति इन ओलों में घिर जाए, तो उसका परमात्मा ही रक्षक है।

उन्होंने यथारीति मुझसे सहमत न होते हुए उत्तर दिया, "यह केवल आपका भ्रम है।"

मेरे रोकने के बावजूद वे अपने आँगन में जा खड़े हुए। परंतु जब दस-बारह ओले इनकी गंजी चाँदिया पर पड़े तो चकराकर पृथ्वी पर गिर पड़े। मूर्च्छा आ गई। उठाकर बिस्तर पर लिटा दिया गया। रात के ग्यारह बजे जब उन्हें होश आया, तो हमें लगा जैसे हमारी मुलाकात एक नए मिर्ज़ा से हुई है। वे एक साधारण मनुष्य की तरह बातें करने लगे। मज़े की बात यह कि जो कुछ हम कहते उससे शत-प्रतिशत सहमत हो जाते। सभी हैरान थे कि यह क्रांति कहाँ से आई।

जब मिर्ज़ा से पूछा गया तो उन्होंने हँसकर फ़रमाया, "मालूम होता है कि यह ओलों का चमत्कार है। ओलों ने मेरे मस्तिष्क की ढीली चूलों को कुछ इस तरह कस दिया है कि भविष्य में किसी बात में नुकता पैदा न कर सकूँगा।"

— *कन्हैयालाल कपूर*

पाठ मूल्यांकन

अभ्यास

शब्दार्थ

उपाधि – योग्यता, पदवी; **हँसोड़** – हँसनेवाला; **तत्वदर्शिता** – यथार्थ देखना; **नुकता पैदा करना** – मीन-मेख निकालना; **अवश्यमेव** – निश्चित रूप से; **लिहाज़** – ध्यान रखना, अदब; **श्रोतागण** – सुननेवाले; **युक्ति** – विचार, उपाय; **अनिद्रा** – नींद न आना; **अभिमत** – विचार, राय, इच्छा; **बेतकल्लुफ़** – बिना औपचारिकता के; **निहायत** – बहुत ज़्यादा, बिलकुल; **अप्राकृतिक** – प्रकृति से विपरीत, असामान्य; **अक्ल के मखाने खाना** – बौद्धिक क्षमता बढ़ाना; **वाहियात** – बेहूदा, बदमाशी; **छिद्रान्वेषी** – कमियाँ निकालनेवाला

Skills/Learning on this Page: • **Word Power** • **जीवन-मूल्य** – तत्वदर्शिता, समाधान देना, यथार्थ पर विश्वास